महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University

A State University Established Under Uttar Pradesh State University Act 1973

(Accredited A^{++} by NAAC)

गोरख पथ

त्रैमासिक

ई-पत्रिका

वर्ष-2, अंक-1, मार्च 2024

प्रकाशक: महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

ई-पत्रिका

वर्ष-2, अंक-1, मार्च 2024

गोरख पथ

संरक्षक

प्रो. पूनम टंडन

कुलपति

(दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)

सम्पादक

डॉ. कुशल नाथ मिश्रा

उप-निदेशक

सह सम्पादक

डॉ. सोनल सिंह

सहायक-निदेशक

डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी

सहायक-ग्रन्थालयी

डॉ. सुनील कुमार

रिसर्च एसोसिएट

संपादन सहयोग

हर्षवर्धन सिंह — वरिष्ठ शोध अध्येता

प्रिया सिंह — कनिष्ठ शोध अध्येता

डॉ. कुँवर रणन्जय सिंह — कनिष्ठ शोध अध्येता

चिन्मयानन्द मल्ल

शुभाकांक्षा

कुलपति

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के स्थापना दिवस के अवसर पर मुझे ई–पत्रिका 'गोरख पथ' के विमोचन का गौरव प्राप्त हुआ था। यह पत्रिका शोधपीठ के यौगिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों का प्रयास, विस्तार एवं विकास को प्रतिबिम्बित करता है। योजना की संकल्पना करने से लेकर सावधानीपूर्वक आदर्शरूप से कार्यान्वित करने तक की पूरी प्रक्रिया रचनात्मकता और अटूट समर्पण के प्रमाण के रूप में स्थापित है। मैं न केवल अनुसंधान को बढ़ावा देने बल्कि सर्वांगीण विकास के पथ पर अग्रसर होने के प्रयासों के लिए शोधपीठ की हार्दिक सराहना करती हूँ। यह शैक्षणिक यात्रा, शोधपीठ के भीतर असाधारण कौशल का एक सच्चा प्रमाण है, निस्संदेह यह ई–पत्रिका शोधपीठ के गतिविधियों से युक्त अत्यधिक उर्जा के साथ जारी रहनी चाहिए। मैं स्थापना दिवस समारोह के दौरान व्यक्त की गई विचारों एवं भावनाओं को प्रतिफलित होते हुए देखने के लिए उत्सुक हूँ। मैं शुभकामनाएं देती हूँ कि शोधपीठ निरन्तर प्रगति की ओर बढ़े।

सम्पादक की कलम से

उप–निदेशक

नाथ पंथ के मुख्य स्तम्भ गोरखनाथ मंदिर के वर्तमान गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा स्थापित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ ने अपनी सार्थक शैक्षणिक उपस्थिति दर्ज कराते हुए भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन एवं ज्ञान परंपरा के क्षेत्र में नाथ पंथ के योगदानों एवं विमर्श को लेकर शैक्षणिक जगत में अनुकरणीय पहल का प्रयास किया है। इस पीठ ने अपने मुख्य उद्देश्यों नाथ दर्शन एवं योग के साधना को लेकर उत्कृष्टता, मौलिकता एवं रचनात्मकता के साथ अपनी गतिविधियों को आगे बढ़ाया है। शोधपीठ आशा करता है कि वर्तमान माननीय कुलपति महोदया के मार्गदर्शन और सक्रिय भूमिका से पूरी ताकत से आगे बढ़ें और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करे और जिस उद्देश्य के लिए इस शोधपीठ की स्थापना की गयी है उसको प्राप्त करे। ई–पत्रिका 'गोरख पथ' के द्वितीय वर्ष के प्रथम अंक में जनवरी से मार्च 2024 तक शोधपीठ की गतिविधियों को संकलित किया गया है। मैं यह ई–पत्रिका उन सभी विद्वतजनों के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो सामान्य रूप से भारतीय ज्ञान परंपरा में और विशेष रूप से नाथ दर्शन में रुचि रखते हैं।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम द्वारा 1957 में आजादी के बाद उत्तर प्रदेश में स्थापित होने वाला पहला विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय ने अपनी लंबी यात्रा में लगातार अपने आदर्श वाक्य, ''आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः'' (सभी दिशाओं से कल्याणकारी विचार मेरे पास आएं) के अनुसार लोगों ने विविध विचारों और विश्वासों को आत्मसात किया। विश्वविद्यालय की भौगोलिक स्थिति 26.7480 डिग्री उत्तर (अक्षांश), 83.3812 डिग्री पूर्व (देशांतर) है। इस विश्वविद्यालय को भगवान बुद्ध, कबीर और गुरु गोरखनाथ, बिस्मिल, हनुमान प्रसाद पोद्दार और गीताप्रेस की आध्यात्मिक, दार्शनिक, देशभक्ति और परोपकारी भावना विरासत में मिली है। 190.96 एकड़ में फैले, इस विश्वविद्यालय में 32 विभागों से युक्त सात संकाय हैं, जिन्होंने अपनी स्थापना के बाद से पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार और नेपाल के लोगों को समग्र शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एक आवासीय–सह–संबद्ध राज्य विश्वविद्यालय के रूप में, जिसका शैक्षणिक क्षेत्राधिकार पूर्वी उत्तर प्रदेश के तीन जिलों में फैला हुआ है, यह एक समृद्ध शैक्षणिक विरासत अनुभवी, योग्य और समर्पित संकाय सदस्यों, पारदर्शी और प्रभावी प्रशासनिक व्यवस्था, पुस्तकालय, पर्याप्त कैरियर विकास के अवसर, उन्नत अनुसंधान सुविधाएं और एक जीवंत और सुरक्षित परिसर के साथ विकास के पथ पर गतिमान है।

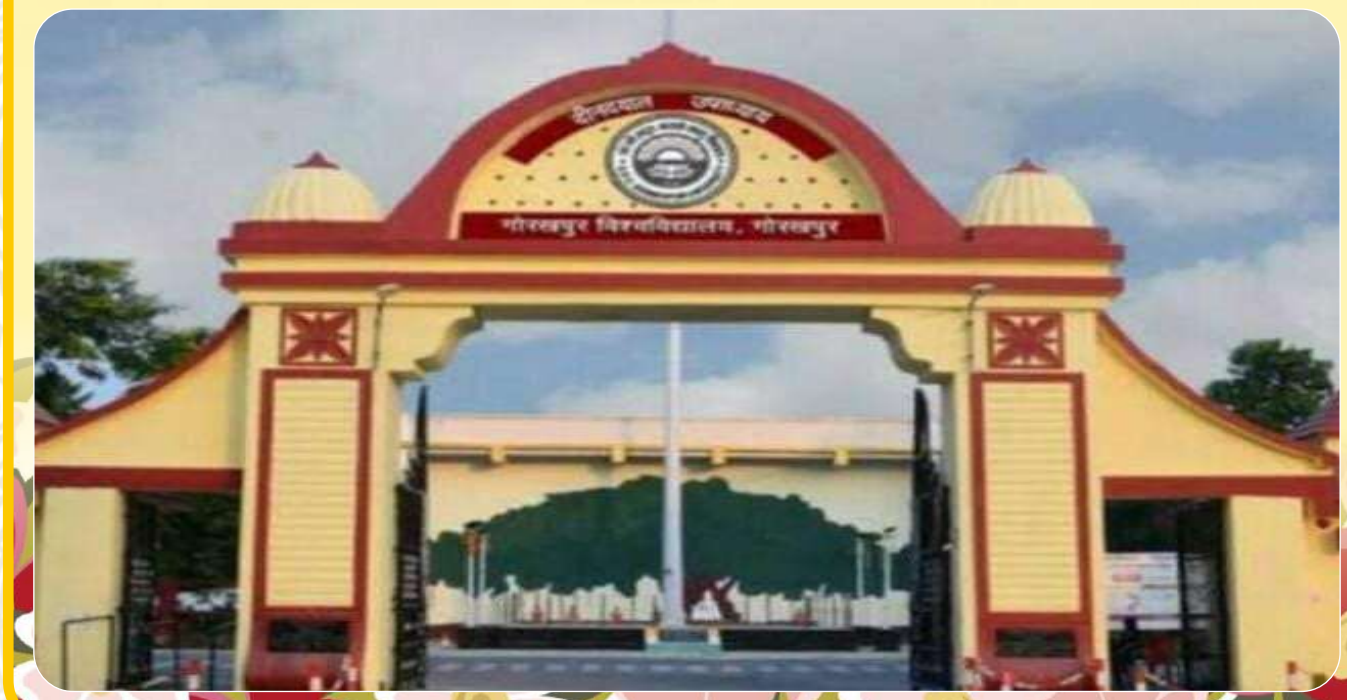

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

भगवान बुद्ध की उदात्त करुणा, महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ की तप–साधना, सन्त–प्रवर कबीर की युगान्तकारी वैचारिकी, द्वारा ही मुख्य रूप से विश्वविद्यालयीय परिक्षेत्रा के लोकचित का निर्माण हुआ है। गोरखपुर शहर में नाथपंथ का सर्वोच्च अधिष्ठान– श्रीगोरखनाथ मंदिर स्थित है जो महायोगी श्रीगोरखनाथ की तपोभूमि है और यही पर वे समाधिस्थ हुए। श्रीगोरखनाथ मंदिर को एक सिद्धपीठ होने की मान्यता के साथ–साथ आस्था एवं अर्चना के प्रमुख केन्द्र के रूप में ख्याति है। श्रीगोरक्षपीठ के पूज्य पीठाधीश्वरों ने समरस समाज के निर्माण में, हिन्दू–संस्कृति के पुनरूद्धार में अभूतपूर्व योगदान दिया है। गोरखपुर के बौद्धिक परिवेश में दीर्घकाल से यह अन्तर्भूत भाव प्रवाहमान रहा है कि नाथपंथ के दार्शनिक, सार्वभौमिक सिद्धांतों एवं अनुप्रयोगों को जन–मन तक संचारित करने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन–केन्द्र की स्थापना हो । महायोगी गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के स्थापना से यही भाव मूर्तरूप लिया है ।

उत्तर प्रदेश शासन के उच्च शिक्षा अनुभाग–4 के शासनादेश संख्या–1090 / सत्तर–4–2018–106 (4–शोधपीठ) / 2018, दिनांक 06–08–2018 द्वारा माननीय राज्यपाल के द्वारा दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की स्थापना की गयी ।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ का शिलान्यास गोरक्षपीठाधीश्वर महंत श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज, माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश शासन के कर कमलों द्वारा 30 नवंबर 2018 को हुआ। शिलान्यास के इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तत्कालीन अध्यक्ष प्रो0 धीरेन्द्र पाल सिंह, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति प्रो0 विजय कृष्ण सिंह एवं पूर्व कुलपति प्रो0 राजेश सिंह का सानिध्य प्राप्त हुआ।

3 जनवरी 2023 को मोहन सिंह भवन से शोधपीठ विश्वविद्यालय के महाराणा प्रताप परिसर में निर्मित भवन में स्थानान्तरित हुआ । इस नव निर्मित शोधपीठ का निर्माण उ. प्र. सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा किया गया। इस भवन में पुस्तकालय, संग्रहालय, संगोष्ठी एवं सम्मेलन कक्ष, दृश्य–श्रव्य कक्ष, प्रकाशन हेतु संगणक कक्ष, अतिथि गृह के साथ साथ शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर पदधारको के अतिरिक्त सामान्य प्रशासन कार्यालय की भी व्यवस्था है। महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के इस नवीन भवन में 13 जनवरी 2023 को नैक पियर टीम का विश्वविद्यालय के मूल्यांकन हेतु आगमन एवं निरीक्षण हो चुका है । इस नैक पियर टीम के मूल्यांकन में विश्वविद्यालय को A++ ग्रेड प्राप्त हुआ है ।

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की स्थापना का उद्देश्य यत्र–तत्र विकीर्ण मन्तव्यों एवं उपदेशों को समेकित कर विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करना है। गोरखपुर विश्वविद्यालय में स्थापित यह शोध–संस्थान जिज्ञासुओं की तात्विक–चिन्तन में अभिवृद्धि के साथ–साथ सामाजिक समरसता का संदेश भी संचारित कर रहा है ।

तनाव प्रबंधन हेतु योग पर विभागीय पॉवर पॉइंट प्रस्तुति

व्याख्यान श्रृंखला के प्रथम चरण की अंतिम कड़ी में दिनांक 10 जनवरी 2024 को शोधपीठ की शोध अध्येत्री प्रिया सिंह ने तनाव प्रबंधन हेतु योग विषय पर अपना पावर पॉइंट प्रस्तुति दिया। उन्होंने अपनी प्रस्तुति में बताया कि तनाव प्रबंधन हेतु योग कारगर है। उन्होंने प्रबंधन, योग, जीवनचर्या, व्यवसाय नेतृत्व हेतु योग की महत्ता, तनाव के लक्षण, तनाव के चरण, तनाव प्रबंधन हेतु योग का प्रभाव, कारपोरेट में योगाभ्यास के उदाहरण, तनाव प्रबंधन हेतु योग की सीमाएं आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा करते हुए योग की महत्ता को दर्शाया। कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत शोधपीठ के उप निदेशक डॉ0 कुशल नाथ मिश्र के परिचयात्मक उद्‌बोधन से हुई। इस अवसर पर सहायक निदेशक डॉ0 सोनल सिंह, डॉ0 मनोज द्विवेदी, डॉ0 सुनील कुमार, हर्षवर्धन सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल तथा छात्र एवं छात्राएं आदि उपस्थित रहे।

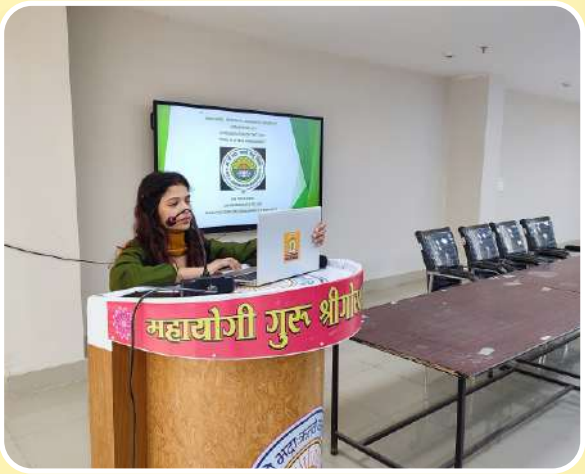

रामायणकालीन चित्रकला प्रतियोगिता

22 जनवरी को अयोध्या के राम मंदिर में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में 18 जनवरी 2024 को रामायणकालीन चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस आयोजन में रामायणकालीन चित्रकला बनाने के निर्देश दिये गये। जिसमें निर्णायक की भूमिका निभाते हुए शिक्षा संकाय की पूर्व अधिष्ठाता प्रो. शोभा गौड़, शिक्षा संकाय की विभागाध्यक्ष व अधिष्ठाता प्रो. सरिता पांडेय तथा शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्रा जी ने दीपाली चौधरी को प्रथम, विष्णु देव शर्मा को द्वितीय एवं पूजा को तृतीय स्थान दिया। इस प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। इस आयोजन में शोधपीठ की सहायक निदेशक डा. सोनल सिंह, सहायक ग्रंथालयी डा. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डा. सुनील कुमार, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानंद मल्ल उपस्थित रहे।

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं नाथ पंथ विषयक आनलाईन संगोष्ठी

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ एवं वैश्विक संस्कृत मंच के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं नाथ पंथ विषयक एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 27 जनवरी 2024 को आभासीय (ऑनलाइन) माध्यम से किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ कार्यक्रम संयोजक डा. राजेश कुमार मिश्र के द्वारा किया गया। इस आनलाईन संगोष्ठी में अतिथियों का स्वागत एवं विषय प्रवर्तन शोधपीठ के उप निदेशक डा. कुशल नाथ मिश्र के द्वारा किया गया। डा. मिश्र ने भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में नाथ पंथ के प्रदेयता पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि के रूप में त्रिपुरा विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो. विनोद कुमार मिश्र जी ने सारगर्भित उद्‌बोधन दिया। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा के समृद्धि में नाथ पंथ के अवदान पर ध्यान आकृष्ट किया। मुख्य वक्ता के रूप में नव नालंदा महाविहार, नालंदा के हिन्दी विभाग के प्रो. रवींद्र नाथ श्रीवास्तव का अध्यक्षीय उद्‌बोधन हुआ। उन्होंने नाथ पंथ के ज्ञान पक्ष का पारंपरिक प्रणाली पर पड़े परवर्ती प्रभाव को रेखांकित किया।

इस संगोष्ठी में विश्वविद्यालय के शिक्षकों, छात्रों सहित शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी तथा रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार तथा शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह, कैटेलागर चिन्मयानंद मल्ल उपस्थित रहे। गोरक्षनाथ शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता सहित वैश्विक संस्कृत मंच के सचिव डॉ. राजेश कुमार सिंह का विशेष आभार प्रकट करते हुये समस्त श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

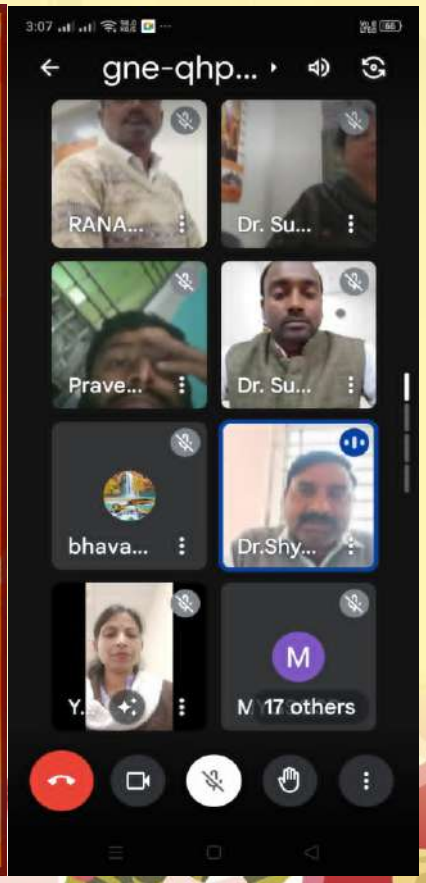

माननीय मुख्यमंत्री द्वारा ई-पत्रिका "गोरख पथ" का लोकार्पण

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की त्रैमासिक ई–पत्रिका "गोरख पथ" के पहले अंक का लोकार्पण महंत श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज, गोरक्षपीठाधीश्वर एवं माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश शासन एवं प्रो. पूनम टण्डन, मा. कुलपति, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के कर कमलों द्वारा दिनांक 28 जनवरी 2024 को विश्वविद्यालय के दीक्षा भवन में हुआ। शोधपीठ के शैक्षणिक एवं शोध गतिविधियों से युक्त यह पत्रिका नियमित रूप से विश्वविद्यालय एवं शोधपीठ के आधिकारिक वेबसाइट पर प्रकाशित की जायेगी। ई पत्रिका ''गोरख पथ'' का विमोचन करते हुए माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने संबोधन में कहा कि अपने समृद्ध परंपरा एवं विरासत को संजोने एवं इसके गौरवमयी समृद्धि से अपना भविष्य उज्ज्वल करने हेतु आज से पांच साल पहले शोधपीठ की स्थापना की गई थी। अपने समृद्ध परंपरा के अध्ययन में यह केंद्र महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। इस अवसर पर ई–पत्रिका के सम्पादक महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र, सह सम्पादक शोधपीठ की सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह, सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार एवं सम्पादन सहयोगी शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह उपस्थित रहे। इस समारोह में विश्वविद्यालय के सभी संकायों के अधिष्ठाता, विभागों के विभागाध्यक्ष, समस्त शिक्षक सहित बृहद संख्या में विद्यार्थियों की उपस्थिति रही। इस लोकार्पण कार्यक्रम में गोरखपुर सांसद रविकिशन शुक्ला, गोरखपुर जिला पंचायत अध्यक्ष साधना सिंह, गोरखपुर शहर के महापौर मंगलेश श्रीवास्तव, विधायक फतेह बहादुर सिंह, महेंद्र पाल सिंह, विपिन सिंह, धर्मेंद्र सिंह, श्रीराम चौहान, सरवन कुमार निषाद, राजेश त्रिपाठी, देवेंद्र प्रताप सिंह मंच पर उपस्थित रहे।

भारतीय ज्ञान परंपरा व्याख्यान श्रृंखला-१

भारतीय ज्ञान परम्परा व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत दिनांक 6 फरवरी 2024 को आभासीय (ऑनलाइन) माध्यम द्वारा व्याख्यान प्रारम्भ की गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ कार्यक्रम समन्वयक डॉ. कुशलनाथ मिश्र के द्वारा मुख्य वक्ता के सामान्य परिचय एवं प्रस्ताविकी के साथ किया गया। इस व्याख्यान के मुख्य वक्ता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के गणित एवं सांख्यिकी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष, पूर्व अधिष्ठाता, छात्र कल्याण तथा आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) के निदेशक प्रो. सुधीर कुमार श्रीवास्तव जी रहे।

प्रो. सुधीर कुमार श्रीवास्तव ने भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध पक्षों पर आधुनिक संदर्भों के साथ विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने भारतीय ज्ञान प्रणाली के श्रुति परंपरा पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि वेद भारतीय ज्ञान के स्रोत हैं। श्रुति परंपरा के कारण वेद सुरक्षित रहे हैं। विचार मस्तिष्क में तरों ताजा बने रहते हैं। हमारे पूर्वजों ने इस तकनीक से ज्ञान परंपरा को सुरक्षित रखा। उन्होंने शास्त्रीय साहित्य को व्याख्यायित करते हुए कहा कि हमारे ज्ञान परंपरा में चतुर्दश विद्या की मान्यता मिली हुई है। चार वेद, छः वेदांग, इतिहास, धर्मशास्त्र, दर्शन, एवं न्याय– ये चौदह शास्त्रीय विद्या है। इसमें आधुनिक विज्ञान के सूत्र विद्यमान है। उन्होंने कणाद के वेग सिद्धांत की तुलना न्यूटन के गति के सिद्धांत से किया। प्राचीन भारत में गणित के उच्च प्रगति पर चर्चा करते हुए उन्होनें आर्यभट्ट, माधवाचार्य, ब्रह्मगुप्त, वराहमिहिर के गणितीय सिद्धांतों एवं योगदान पर आधुनिक उच्च गणित के आलोक में विस्तार से समझाते हुए अपने सम्बोधन मे कहा कि इनके ग्रंथों में पर्यावरण विज्ञान, हाइड्रोलोजी, जिओलाजी के सिद्धांत के सूत्र मिलते हैं।

इस व्याख्यान श्रृंखला में कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा मुख्य वक्ता एवं समस्त श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, डा. कुंवर. रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल तथा वर्धा विश्वविद्यालय के पूर्व प्रति कुलपति प्रो. चितरंजन मिश्र, प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा, प्रो. विनोद कुमार सिंह, प्रो. विजय कुमार, प्रो. विजय शंकर वर्मा, प्रो. गौर हरि बेहरा, प्रो. प्रदीप यादव, प्रो. हिमांशु पांडे, प्रो. अनुराग द्विवेदी, प्रो. उमेश यादव, प्रो. सुधा यादव, डॉ. गिरिजेश यादव, डॉ. आलोक कुमार आदि विश्वविद्यालय के शिक्षक, विद्यार्थी एवं शोध छात्र जुड़े रहें। श्रोताओं ने भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित अनेक प्रश्न पूछे जिनका मुख्य वक्ता के द्वारा समाधान किया गया।

गोरक्षनाथ शोधपीठ को पुस्तक भेंट

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में दिनांक 13 फरवरी 2024 को महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज के हिंदी विषय के प्रवक्ता एवं गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर से प्रकाशित ''योगवाणी'' के संपादक डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त ने शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र से भेंट कर शोधपीठ के पुस्तकालय में अपनी लिखी पांच पुस्तकें नवनाथ अउर नाथजोगी, महायोगी गोरखनाथ, महायोगी गोरखनाथ का जीवन–दर्शन, महंत योगी आदित्यनाथ वचनावली एवं राष्ट्रसंत महंत अवेद्यनाथ वचनामृत भेंटस्वरूप प्रदान किया। डॉ. गुप्त की लिखी ये पुस्तकें गोरखनाथ एवं नाथ पंथ के अवदान से संबंधित है। उल्लेखनीय है कि गोरक्षनाथ शोधपीठ का पुस्तकालय नाथ पंथ को समर्पित देश का उत्कृष्ट संदर्भ ग्रंथालय है।

साथ ही बायोटेक्नॉलजी विभाग के अध्यक्ष राजर्षि गौर ने ''श्री गुरुजी समग्र'' पुस्तक के 11 खंड शोधपीठ के पुस्तकालय को भेंट स्वरूप प्रदान किया। शोधपीठ के उपनिदेशक ने दोनो ही विद्वतजनों का सम्मान कर आभार प्रकट किया।

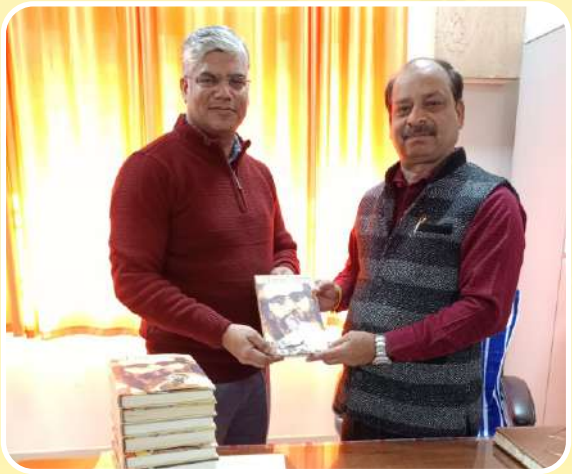

विशेष विभागीय बैठक

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में उप निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र द्वारा गुरुवार 16 फरवरी 2024 को शोधपीठ के बैठक कक्ष में एक बैठक का आयोजन किया गया । इस बैठक में डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, डॉ. सुनील कुमार, हर्षवर्धन सिंह, कुँवर रणन्जय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल उपस्थित थे। बैठक में निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा की गई जिसमें गोरक्षनाथ शोधपीठ में एक निबंध प्रतियोगिता विषय श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में गोरक्षपीठ का योगदान आयोजित करने का निर्णय लिया गया। शोधपीठ के वेबसाइट पर शोधपीठ द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का आंशिक पीडीएफ अपलोड करने का निर्णय लिया गया। सभी शोध अध्येताओं को एक– एक शोध निर्देश मानक को ध्यान में रखकर 18 मार्च तक लिखने का निर्देश दिया गया। सभी शोध अध्येताओं को **नाथ पंथ का परिचय** क्रेडिट कोर्स के प्रत्येक यूनिट का ई–कंटेन्ट लिखने का निर्देश दिया गया। साथ ही शोधपीठ में दान की गयी पुस्तकों को पुस्तकालय के स्टॉक रजिस्टर में अंकित करने के लिए निर्देश दिया गया।

निबंध प्रतियोगिता

श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में गोरक्षपीठ का योगदान विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र के निर्देशन में दिनांक 26 फरवरी 2024 किया गया। इस निबंध का उद्देश्य छात्रों में अपने सांस्कृतिक विरासत के प्रति गहरी रूचि एवं समझ विकसित हो, इस उद्देश्य को लेकर इसकी रूप–रेखा तैयार की गयी। प्रतिभागियों द्वारा लिखे गये निबंध का अवलोकन विषय विशेषज्ञ द्वारा कराया जायेगा तदोपरांत प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध छात्रों ने प्रतिभाग किया। इस आयोजन में शोधपीठ की सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह, सहायक ग्रंथालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानंद मल्ल उपस्थित रहे।

भारत–नेपाल सांस्कृतिक सम्बन्धों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक संगोष्ठी की सह–अध्यक्षता

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय एवं महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूषण, गोरखपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित भारत–नेपाल सांस्कृतिक सम्बन्धों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक विषयक तीन दिवसीय 1–3 मार्च, 2024 अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के पंचम तकनीकी सत्र में महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र ने सह अध्यक्षता की। अपने सह–अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डॉ. मिश्र ने भारत नेपाल के संस्कृति के साझा तत्वों के बारे में चर्चा करते हुए संयुक्त तीर्थ पथ योजना की महत्ता पर प्रकाश डाला।

संगोष्ठी में विषय विशेषज्ञ के रूप में व्याख्यान

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय एवं महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूषण, गोरखपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित भारत–नेपाल सांस्कृतिक सम्बन्धों की विकास यात्राः अतीत से वर्तमान तक विषयक तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी 1–3 मार्च, 2024 के पंचम तकनीकी सत्र में महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह ने विषय विशेषज्ञ के रूप में सहभागिता की। उन्होंने 'भारत नेपाल साहित्यिक सम्बन्धों में नेपाली संस्कृत अभिलेखों का योगदान' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में डॉ. सिंह ने नेपाल में संस्कृत में पाए गए अभिलेखों का विस्तृत विवरण दिया। इन अभिलेखों ने भारत नेपाल सम्बन्धों में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की, इस विषय पर भी उन्होंने प्रकाश डाला।

हठयोग और स्वास्थ्य पर विभागीय व्याख्यान

व्याख्यान श्रृंखला के द्वितीय चरण की प्रथम कड़ी में दिनांक 4 मार्च 2024 को शोधपीठ के शोध अध्येता डॉ0 कुँवर रणंजय सिंह ने 'हठयोग और स्वास्थ्य' विषयक अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। 12वीं सदी के राजतरंगिणी में, इसका उल्लेख सांप (कुंडलित के अर्थ में) के लिए एक संज्ञा के रूप में किया गया है। कुंडलिनी एक संस्कृत शब्द है, जो कुंडल से लिया गया है। कुंडलिनी ऊर्जा, जो हमारे भीतर संग्रहीत है, यह सुप्तावस्था में रहती है। सचेतना व सावधानीपूर्वक ध्यान, योग, प्राणायाम, क्रिया द्वारा कुंडलिनी को जागृत किया जा सकता है।

कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत शोधपीठ के उप निदेशक डॉ0 कुशल नाथ मिश्र के परिचयात्मक उद्बोधन से हुई। इस अवसर पर डॉ0 सोनल सिंह, डॉ0 मनोज द्विवेदी, डॉ0 सुनील कुमार, हर्षवर्धन सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल सहित अनेक शोधार्थी उपस्थित रहे।

इण्टरनेशल एसोसिएशन ऑफ संस्कृत स्टडीज की अध्यक्ष प्रो. दीप्ति जिपाठी का भ्रमण

दिल्ली विश्वविद्यालय की संस्कृत विभाग की पूर्व अध्यक्ष एवं इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन योजना की पूर्व निदेशक प्रो दीप्ति त्रिपाठी ने दिनांक 5 मार्च 2024 को शोधपीठ का भ्रमण एवं निरीक्षण किया। उन्होंने शोधपीठ के संग्रहालय के निर्माण हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिये। निरीक्षण के दौरान शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र, श्री प्रबोध मिश्र, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, डॉ. सुनील कुमार, हर्षवर्धन सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल सहित समस्त शोध अध्येता उपस्थित रहे।

बदलते समाज में सार्वजनिक पुस्तकालयों की भूमिका : चुनौतियाँ और अवसर संगोष्ठी की सह-अध्यक्षता

केन्द्रीय पुस्तकालय, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर एवं राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित बदलते समाज में सार्वजनिक पुस्तकालयों की भूमिका : चुनौतियाँ और अवसर विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 16–17 मार्च, 2024 के प्रथम तकनीकी सत्र में महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र ने सह– अध्यक्षता की। सत्र की सह–अध्यक्षता कर रहे डॉ0 कुशलनाथ मिश्र ने पुस्तकालयों में आ रही चुनौतियों पर अपना विचार रखा।

आयोजन सचिव के रूप में दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन

केन्द्रीय पुस्तकालय, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर एवं राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित बदलते समाज में सार्वजनिक पुस्तकालयों की भूमिका : चुनौतियाँ और अवसर विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 16-17 मार्च, 2024 के आयोजन सचिव कार्यभार का निर्वहन महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के सहायक ग्रंथालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी द्वारा किया गया। इस अवसर पर एक पुस्तक का विमोचन दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के कुलपति प्रो. पूनम टंडन एवं गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमाशंकर दुबे के द्वारा किया गया। इस पुस्तक को अन्य संपादकों के साथ मिलकर डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी ने सम्पादित किया है।

भारतीय ज्ञान परम्परा व्याख्यान श्रृंखला-2

भारतीय ज्ञान परम्परा व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत दिनांक 20 मार्च 2024 को आभासीय माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक मनोविज्ञान विषय पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ कार्यक्रम समन्वयक डॉ. कुशलनाथ मिश्र के द्वारा मुख्य वक्ता के सामान्य परिचय एवं विषय प्रवर्तन के साथ किया गया। इस व्याख्यान के मुख्य वक्ता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, छात्र कल्याण प्रो. अनुभूति दुबे रहीं।

प्रो. अनुभूति दुबे ने भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध तत्वों का आधुनिक मनोविज्ञान के साथ तुलना करते हुए विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने वात, पित्त और कफ के व्यक्तित्व के ऊपर प्रभाव एवं मापन को लेकर किये जा रहे शोधों से अवगत कराया तथा सत्व रजस एवं तमस गुणों के व्यक्तित्व विकास एवं कॉउन्सिलिंग अध्ययन को विस्तार से समझाया। अमेरिकन साइकोलाजिकल एसोसिएशन एवं पाज़िटिव साइकोलोजी की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि मनोविज्ञान का आधार भारतीय ज्ञान परंपरा से आता है। मनोविज्ञान के नवीन थिरेपीकल एप्रोच में भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों का प्रयोग किया जा रहा है। पंचकोश, त्रिगुण, प्रकृति के तत्त्वों को लेकर मनोवैज्ञानिक प्रश्नावलियों का निर्माण किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि आधुनिक मनोविज्ञान में भारतीय ज्ञान परंपरा के अनेक सिद्धांतों की अध्ययन किये जाने की आवश्यकता है।

इस व्याख्यान कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा किया गया। शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा मुख्य वक्ता एवं समस्त श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, शोध अध्येता डॉ. कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल उपस्थित रहे। वर्धा विश्वविद्यालय के पूर्व प्रति कुलपति प्रो. चितरंजन मिश्र सहित प्रो. शरद मिश्र, डॉ. संजय कुमार राम आदि विश्वविद्यालय के शिक्षक, विद्यार्थी एवं शोध छात्र जुड़े रहें।

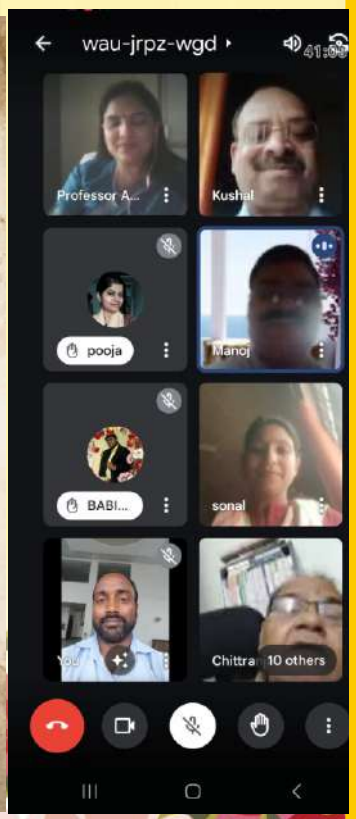

कुण्डलिनी अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए आलेखों का सम्पादन

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के द्वारा कुण्डलिनी अर्द्धवार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका का मूल विषय नाथ पंथ : योग एवं स्वास्थ्य है। यह पत्रिका द्विभाषी (हिन्दी तथा अंग्रेजी) है। इस पत्रिका के लिए लेख मार्च माह तक प्राप्त किये जा चुके हैं। पत्रिका का सम्पादन कार्य चल रहा है। जल्द ही इसका पहला अंक प्रकाशित किया जायेगा।

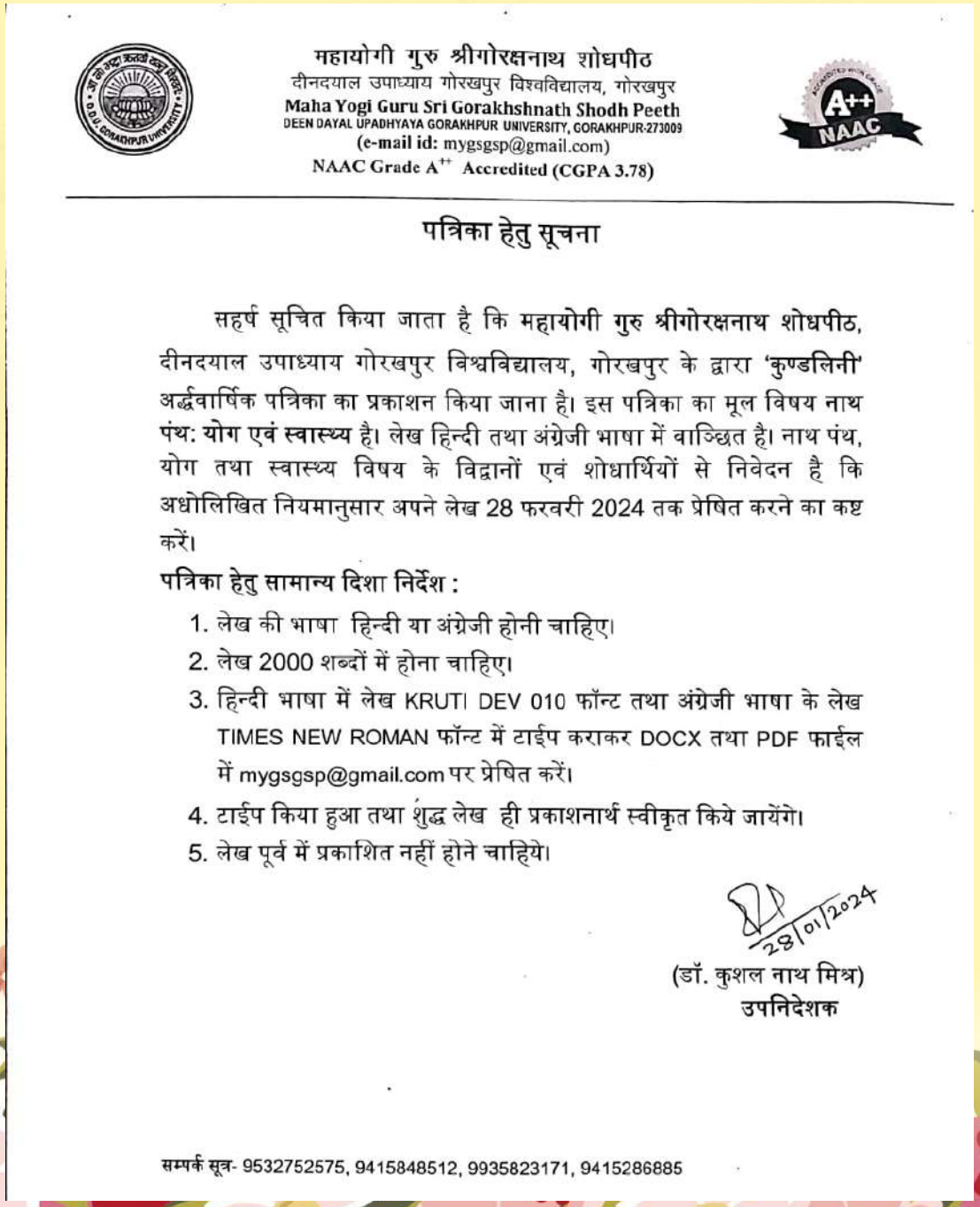

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
Maha Yogi Guru Sri Gorakhshnath Shodh Peeth
DEEN DAYAL UPADHYAYA GORAKHPUR UNIVERSITY, GORAKHPUR-273009
(e-mail id: mygsgsp@gmail.com)
NAAC Grade A++ Accredited (CGPA 3.78)

पत्रिका हेतु सूचना

सहर्ष सूचित किया जाता है कि **महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ**, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के द्वारा **'कुण्डलिनी'** अर्द्धवार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जाना है। इस पत्रिका का मूल विषय नाथ पंथ: **योग एवं स्वास्थ्य** है। लेख हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में वाञ्छित है। नाथ पंथ, योग तथा स्वास्थ्य विषय के विद्वानों एवं शोधार्थियों से निवेदन है कि अधोलिखित नियमानुसार अपने लेख 28 फरवरी 2024 तक प्रेषित करने का कष्ट करें।

पत्रिका हेतु सामान्य दिशा निर्देश :

1. लेख की भाषा हिन्दी या अंग्रेजी होनी चाहिए।
2. लेख 2000 शब्दों में होना चाहिए।
3. हिन्दी भाषा में लेख KRUTI DEV 010 फॉन्ट तथा अंग्रेजी भाषा के लेख TIMES NEW ROMAN फॉन्ट में टाईप कराकर DOCX तथा PDF फाईल में mygsgsp@gmail.com पर प्रेषित करें।
4. टाईप किया हुआ तथा शुद्ध लेख ही प्रकाशनार्थ स्वीकृत किये जायेंगे।
5. लेख पूर्व में प्रकाशित नहीं होने चाहिये।

28/01/2024
(डॉ. कुशल नाथ मिश्र)
उपनिदेशक

सम्पर्क सूत्र- 9532752575, 9415848512, 9935823171, 9415286885

विविधा

राम मन्दिर में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम, 22 जनवरी 2024

महेन्द्र कुमार
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय शैक्षिक महासंघ, नई दिल्ली
का शोधपीठ में भ्रमण, 30 जनवरी 2024

प्रो. एम.ए.शर्मा
रसायन विज्ञान विभाग
त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल का शोधपीठ में भ्रमण

डॉ. भूपेन्द्र कुमार सिंह,
ग्रंथालयी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
का शोधपीठ में भ्रमण, 12 जनवरी 2024

विश्वविद्यालय के नव नियुक्त शिक्षकों का
शोधपीठ में भ्रमण

शोध पत्र प्रकाशन

क्र.सं.	नाम	शोध पत्र का शीर्षक	पत्रिका	अंक
1.	डॉ. कुशल नाथ मिश्र	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में पुस्तकालयों की भूमिकाः उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ में	Role of Public Libraries in Changing Society	2024
2.	डॉ. सोनल सिंह	सुखोबुद्धानमुप्पादो	IJCTR	March 2024
3.	डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी	उत्तर प्रदेश सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम, 2006	Role of Public Libraries in Changing Society	2024
4.	डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी	गोरखपुर के विशेष संदर्भ में सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास की प्रगति	Role of Public Libraries in Changing Society	2024
5.	डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी	Study of literature output on green Library from 2014-2023: A Scientometric Analysis Based on Web of Science	Role of Public Libraries in Changing Society	2024
6.	डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी	Contribution of doctoral theses in Shodhganga a national level open access ETD repository: current status and developmentwith special reference to Uttar Pradesh	Role of Public Libraries in Changing Society	2024
7.	डॉ. सुनील कुमार	गोरखपुर के विशेष संदर्भ में सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास की प्रगति	Role of Public Libraries in Changing Society	2024
8.	हर्षवर्धन सिंह	A Holistic Study of Nath Panth and Cultural Nationalism	IJCR, Shimla	February 2024
9.	प्रिया सिंह	Yoga For Stress Management	Anukriti , Varanasi	January 2024

शोध पत्र प्रस्तुतीकरण

क्र.सं.	नाम	शोध पत्र का शीर्षक	संगोष्ठी / सम्मेलन
1.	डॉ. सोनल सिंह	बौद्ध संस्कृति में मैत्रय कथा	राष्ट्रीय संगोष्ठी, 13–14 फरवरी, 2024 केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, लखनऊ (ऑनलाइन)
2.	डॉ. सोनल सिंह	विश्व संस्कृत महिला सम्मेलन की प्रथम महिला अध्यक्ष	राष्ट्रीय संगोष्ठी, 21–22 मार्च, 2024 माता सुंदरी कालेज फार वूमेन, दिल्ली (ऑनलाइन)
3.	डॉ. सुनील कुमार	गोरखपुर के विशेष संदर्भ में सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास कि प्रगति	राष्ट्रीय संगोष्ठी 16-17 मार्च, 2024 दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
4.	डॉ. सुनील कुमार	वर्तमान में भारत नेपाल संबंध एक विहंगम दृष्टि	अंतरर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूषण, गोरखपुर, 1,2,3 मार्च, 2024

क्र.सं.	नाम	शोध पत्र का शीर्षक	संगोष्ठी / सम्मेलन
5.	हर्षवर्धन सिंह	भारतीय ज्ञान परंपरा एवं नाथ पंथ	अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, 20–21 मार्च, 2024 लखनऊ विश्वविद्यालय
6.	हर्षवर्धन सिंह	Exploring New Paradigms in yog With Special refernce of Nath Panth	राष्ट्रीय संगोष्ठी, 09-10 मार्च, 2024 दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
7.	हर्षवर्धन सिंह	Role of Nath Panth in India Nepal Relationship	अंतरर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूषण, गोरखपुर, 1–3 मार्च, 2024
8.	डॉ. कुँवर रणंजय सिंह	नाथ पंथ एवं इसकी समकालिक उपादेयता	अंतरर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूषण, गोरखपुर, 1–3 मार्च, 2024
9.	डॉ. कुँवर रणंजय सिंह	वेदों के अध्ययन में भारतीय दर्शन की उपादेयता	राष्ट्रीय संगोष्ठी, 5-7 फरवरी, 2024 दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
10.	डॉ. कुँवर रणंजय सिंह	शिक्षा के क्षेत्र में नाथ पंथ का योगदान	राष्ट्रीय संगोष्ठी, 5-7 मार्च, 2024 दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
11.	डॉ. कुँवर रणंजय सिंह	शंकराचार्य और गोरखनाथ के दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन	राष्ट्रीय संगोष्ठी, 30 मार्च, 2024 दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डीडीयू : ई-पत्रिका "गोरख पथ" का मुख्यमंत्री ने किया विमोचन

मुख्य संवाददाता (शाश्वत राम तिवारी)

गोरखपुर सुपर फास्ट टाइम्स

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की त्रैमासिक ई-पत्रिका "गोरख पथ" का लोकार्पण सीएम योगी आदित्यनाथ एवं प्रो.पूनम टण्डन (कुलपति,डीडीयू विश्वविद्यालय गोरखपुर) के द्वारा रविवार को विश्वविद्यालय के दीक्षा भवन में सांसद रविकिशन शुक्ला की उपस्थिति में हुआ। ई-पत्रिका के पहले अंक में शोधपीठ के पिछले तीन माह के शैक्षणिक एवं शोध गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। यह पत्रिका नियमित रूप से विश्वविद्यालय एवं शोधपीठ के आधिकारिक वेबसाइट पर प्रकाशित किया जाएगा। ई-पत्रिका गोरख पथ का विमोचन करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने संबोधन में कहा कि अपने समृद्ध परंपरा एवं विरासत को संजोने एवं इसके गौरवमयी समृद्धि से अपना भविष्य

उज्ज्वल करने हेतु आज से पांच साल पहले शोधपीठ की स्थापना की गई थी। अपने समृद्ध परंपरा के अध्ययन में यह केंद्र महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। इस अवसर पर ई-पत्रिका के सम्पादक महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के उप निदेशक डा.कुशलनाथ मिश्र, सह-सम्पादक शोधपीठ के सहायक निदेशक डा.सोनल सिंह,सहायक ग्रन्थालयी डा.मनोज कुमार द्विवेदी,रिसर्च एसोसिएट डा.सुनील कुमार एवं सम्पादन सहयोगी शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह उपस्थित रहे। समारोह में विश्वविद्यालय के सभी संकायों के अधिष्ठाता एवं सभी विभागों के विभागाध्यक्ष,शिक्षक गण सहित भारी संख्या में विद्यार्थियों की उपस्थिति रही। लोकार्पण कार्यक्रम में गोरखपुर जिला पंचायत अध्यक्ष साधना सिंह,गोरखपुर शहर के महापौर मंगलेश श्रीवास्तव, विधायक फतेह बहादुर सिंह,महेंद्र पाल सिंह,विपिन सिंह,श्रीराम चौहान,सरवन कुमार निषाद, राजेश त्रिपाठी, देवेंद्र प्रताप सिंह मंच पर उपस्थित रहे।

भारतीय ज्ञान परंपरा के स्त्रोत हैं वेद : प्रो. सुधीर कुमार

गोरखपुर(एसएनबी)। वेद भारतीय ज्ञान के स्त्रोत हैं। श्रुति परंपरा के कारण वेद सुरक्षित रहे हैं। हमारे पूर्वजों ने इस तकनीक से ज्ञान परंपरा को सुरक्षित रखा। यह बातें प्रो. सुधीर कुमार श्रीवास्तव पूर्व विभागाध्यक्ष गणित एवं सांख्यिकी विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय ने व्यक्त किये। वे दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा आयोजित 'भारतीय ज्ञान परंपरा' विषयक ऑनलाइन व्याख्यान को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे।

शोधपीठ में भारतीय ज्ञान परंपरा पर आनलाईन व्याख्यान आयोजित

उन्होंने शास्त्रीय साहित्य को व्याख्यायित करते हुए कहा कि हमारे ज्ञान परंपरा में चतुर्दश विद्या की मान्यता मिली हुई है। प्रो. श्रीवास्तव ने भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध पक्षों पर आधुनिक संदर्भों के साथ विस्तार से प्रकाश डाला। इसके पूर्व शुभारम्भ कार्यक्रम समन्वयक डॉ. कुशलनाथ मिश्र द्वारा मुख्य वक्ता के सामान्य परिचय एवं प्रस्ताविकी के साथ किया गया। इस आनलाइन व्याख्यान में कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा किया गया। शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह धन्यवाद ज्ञापित किया। वर्धा विश्वविद्यालय के पूर्व प्रति कुलपति प्रो. चितरंजन मिश्र सहित प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा, प्रो. विनोद कुमार सिंह, प्रो. विजय कुमार, प्रो. विजय शंकर वर्मा, प्रो. गौर हरि बेहरा, प्रो. प्रदीप यादव, प्रो. हिमांशु पांडे सहित विश्वविद्यालय के कई शिक्षक, विद्यार्थी एवं शोध छात्र जुड़े रहे। श्रोताओं ने भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित अनेक प्रश्न

चित्र के जरिये विद्यार्थियों ने दिखाए रामायण के दृश्य

रामायणकालीन चित्रों को दिखाते विद्यार्थी ● जागरण

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के महायोगी गुरु गोरक्षनाथ शोधपीठ में 22 जनवरी को अयोध्या राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के दृष्टिगत गुरुवार को रामायणकालीन चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने जीवंत चित्रों को जरिये रामायण का दृश्य दिखाया। शिक्षा संकाय के पूर्व अधिष्ठाता प्रो. शोभा गौड़, शिक्षा संकाय के विभागाध्यक्ष व अधिष्ठाता प्रो. सरिता पांडेय तथा शोधपीठ के उप निदेशक डा. कुशल नाथ मिश्रा ने निर्णायक की भूमिका निभाई। उन्होंने बेहतर चित्र के आधार पर दीपाली चौधरी को पहले, विष्णु देव शर्मा को दूसरे और पूजा को तीसरे स्थान के लिए चुना।

इस प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। इस आयोजन में शोधपीठ के सहायक निदेशक डा. सोनल सिंह, सहायक ग्रंथालयी डा. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डा. सुनील कुमार, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानंद मल्ल उपस्थित रहे।

भारतीय ज्ञान परंपरा मनोविज्ञान का आधार : प्रो. अनुभूति दुबे

□शोधपीठ में भारतीय ज्ञान परंपरा पर आनलाईन व्याख्यान का हुआ आयोजन

स्वतंत्र वेतना

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो पूनम टण्डन के संरक्षण में व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत बुधवार को भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक मनोविज्ञान विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ कार्यक्रम समन्वयक डॉ. कुशलनाथ मिश्र के द्वारा मुख्य वक्ता के सामान्य परिचय एवं विषय प्रवर्तन के साथ किया गया। इस व्याख्यान के मुख्य वक्ता विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, छात्र कल्याण प्रो. अनुभूति दुबे रहीं। प्रो.अनुभूति दुबे ने भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध तत्वों का आधुनिक मनोविज्ञान के साथ तुलना करते हुए विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने वात, पित्त और कफ के व्यक्तित्व के ऊपर प्रभाव एवं मापन को लेकर किये जा रहे शोधों से अवगत कराया तथा सत्व रजस एवं तमस गुणों के व्यक्तित्व विकास एवं कॉउन्सलिंग अध्ययन को विस्तार से समझाया। अमेरिकन साइकोलाजिकल एसोसिएशन

एवं पाजिटिव साइकोलोजी की चर्चा करते हुए उन्होने बताया कि मनोविज्ञान का आधार भारतीय ज्ञान परंपरा से आता है।

मनोविज्ञान के नवीन थिरेपीकल एप्रोच में भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों का प्रयोग किया जा रहा है। पंचकोश, त्रिगुण, प्रकृति के तत्वों को लेकर मनोवैज्ञानिक प्रश्नावलियों का निर्माण किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि आधुनिक मनोविज्ञान में भारतीय ज्ञान परंपरा के अनेक सिद्धांतों की अध्ययन किये जाने की आवश्यकता है।

व्याख्यान में कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार द्वारा किया गया। शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह द्वारा मुख्य वक्ता एवं समस्त श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। शोधपीठ के सहायक ग्रन्थालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, शोध अध्येता डा. कुं. रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानन्द मल्ल उपस्थित रहे।

वर्धा विश्वविद्यालय के पूर्व प्रति कुलपति प्रो. चितरंजन मिश्र सहित प्रो. शरद मिश्र, डॉ. संजय कुमार राम आदि विश्वविद्यालय के शिक्षक, विद्यार्थी एवं शोध छात्र जुड़े रहें।

Yogi also inaugurated the e-magazine 'Gorakh Path' of the Mahayogi Guru Shri Gorakshanath Research Centre at DDU Gorakhpur University. "Knowledge of tradition not only brings a sense of pride but also contributes to the enhancement of the present and the prospect of a bright future," the CM added.

गोरक्षपीठ के योगदान को प्रतिभागियों ने दिया शब्द

गोरखपुर(एसएनबी)। महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ दीदउ गोविवि में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिभागियों ने श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में गोरक्षपीठ का योगदान विषय पर अपने विचार रखे।

■ श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन पर गोरक्षनाथ शोधपीठ डीडीयू में निबंध प्रतियोगिता आयोजित

प्रतियोगिता में पथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विजेताओं को पुरस्कृत किया जायेगा।

निबंध प्रतियोगिता के बारे में बताते हुए डॉ. कुशल नाथ मिश्र ने कहा कि आज के समय में छात्रों को अपने सांस्कृतिक विरासत को ठीक से समझना चाहिए। इसी उद्देश्य से प्रतियोगियों को यह विषय दिया गया। प्रतिभागियों द्वारा लिखे निबंध की जांच विवि के शिक्षकों द्वारा कराया जाएगा। इसके उपरांत प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध छात्रों ने प्रतिभाग किया। इस आयोजन

में शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ.सोनल सिंह, सहायक ग्रंथालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानंद मल्ल उपस्थित रहे।

निबंध प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

गोरखपुर। गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में विषय श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में गोरक्षपीठ का योगदान पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र के निर्देशन में किया गया। डॉ. कुशल नाथ मिश्र ने बताया कि आज के समय में छात्रों को अपने सांस्कृतिक विरासत को ठीक से समझना चाहिए। इसी उद्देश्य से प्रतियोगियों को यह विषय दिया गया। प्रतिभागियों द्वारा लिखे निबंध की जांच विश्वविद्यालय के शिक्षकों द्वारा कराया जाएगा, इसके उपरांत प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध छात्रों ने प्रतिभाग किया।

ई-पत्रिका 'गोरख पथ' का विमोचन

GORAKHPUR (28 Jan): गोरखपुर यूनिवर्सिटी स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की त्रैमासिक ई-पत्रिका गोरख पथ का विमोचन सीएम योगी आदित्यनाथ ने किया. इस मौके पर वीसी प्रो. पूनम टंडन ने किया. दीक्षा भवन में आयोजित कार्यक्रम में सांसद रविकिशन शुक्ला भी मौजूद रहे. इस ई-पत्रिका के पहले अंक में शोधपीठ के पिछले तीन माह के शैक्षणिक व शोध गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है. यह पत्रिका नियमित रूप से यूनिवर्सिटी एवं शोधपीठ के आधिकारिक वेबसाइट पर प्रकाशित की जाएगी. अपने समृद्ध परंपरा के अध्ययन में यह केंद्र महत्वपूर्ण सिद्ध होगा. इस अवसर डॉ. कुशलनाथ मिश्र, डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, डॉ. सुनील कुमार व हर्षवर्धन सिंह उपस्थित रहे.

सीएम योगी ने किया ई.पत्रिका गोरख पथ का विमोचन-कार्यक्रम के मंच से सीएम योगी ने दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के महायोगी गुरु श्रीगोरखपंथ शोधपीठ की ई.पत्रिका है।

श्रुति परंपरा के कारण सुरक्षित हैं वेद : प्रो. सुधीर

गोरखपुर। गोरखपुर विश्वविद्यालय के आईक्यूएसी के प्रो. सुधीर श्रीवास्तव ने कहा कि वेद भारतीय ज्ञान के स्रोत हैं। श्रुति परंपरा के कारण वेद सुरक्षित रहे हैं। विचार मस्तिष्क में तरोताजा बने रहते हैं। हमारे पूर्वजों ने इस तकनीक से ज्ञान परंपरा को सुरक्षित रखा।

वह विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु गोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा 'भारतीय ज्ञान परंपरा' विषयक व्याख्यान को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारी ज्ञान परंपरा में चतुर्दश विद्या की मान्यता मिली हुई है। चार वेद, छह वेदांग, इतिहास, धर्मशास्त्र, दर्शन एवं न्याय। ये चौदह शास्त्रीय विद्या है। इसमें आधुनिक विज्ञान के सूत्र विद्यमान हैं।

शोधपीठ के समन्वयक डॉ कुशल नाथ मिश्र ने प्रस्ताविकी रखी। संचालन डॉ. सुनील कुमार ने एवं आभार ज्ञापन डॉ सोनल सिंह ने किया। इस दौरान प्रो. चितरंजन मिश्र, प्रो. हर्ष सिन्हा, प्रो. विनोद सिंह, प्रो. विजय कुमार आदि रहे। संवाद

डॉ. फूलचन्द ने गोरक्षनाथ शोधपीठ को भेंट की पाँच पुस्तकें

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर।दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में आज महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज के हिंदी विषय के प्रवक्ता एवं गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर से प्रकाशित योगवाणी के संपादक डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त ने शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र से भेंट कर शोधपीठ के पुस्तकालय में अपनी लिखी पांच पुस्तकें नवनाथ अउर नाथजोगी, महायोगी गोरखनाथ, महायोगी गोरखनाथ का जीवन-दर्शन, महंत योगी आदित्यनाथ वचनावली एवं राष्ट्रसंत महंत अवेद्यनाथ वचनामृत भेंटस्वरूप प्रदान किया। डॉ. गुप्त की लिखी ये पुस्तकें गोरखनाथ एवं नाथ पंथ के अवदान से संबंधित है। उल्लेखनीय है कि गोरक्षनाथ शोधपीठ का पुस्तकालय नाथ पंथ को समर्पित देश का उत्कृष्ट संदर्भ ग्रंथालय है।

गोवि स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के सेमिनार हाल में सोमवार को निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते प्रतिभागी। • हिन्दुस्तान

सांस्कृतिकविरासतकोसमझनेकीजरूरत

गोरखपुर। गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में 'श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में गोरक्षपीठ का योगदान' विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र ने कहा कि आज के समय में छात्रों को अपने सांस्कृतिक विरासत को ठीक से समझना चाहिए। डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मनोज द्विवेदी, डॉ. सुनील कुमार, हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह आदि मौजूद रहे।

महायोगी गोरक्षनाथ शोधपीठ में आयोजित हुआ विभागीय व्याख्यान

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गोरक्षनाथ शोधपीठ की कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में व्याख्यान शृंखला के द्वितीय चरण की प्रथम कड़ी में शोधपीठ के शोध अध्येता डॉ. सुधिर [illegible] सिंह ने कुण्डलिनी और स्वास्थ्य विषयक अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

उन्होंने बताया कि कुंडलिनी की अवधारणा का उल्लेख उपनिषदों (9वीं-7वीं शताब्दी ईसा पूर्व) में किया गया है। संस्कृत विशेषण कुण्डलिन का अर्थ है गोलाकार या कुंडलाकार। 12वीं सदी के हठयोगिनी इतिहास में, इसका उल्लेख सर्प (कुंडलिनि के अर्थ में) के लिए एक संज्ञा के रूप में किया गया है।

कुंडलिनी एक संस्कृत शब्द है, जो कुंडल से लिया गया है, कुंडलिनी ऊर्जा, जो हमारे भीतर संग्रहीत है। यह हर समय गहरी नींद में सोई रहती है, जब तक कि हम उसे जगाने की कोशिश नहीं करते। यह ऊर्जा निष्क्रिय रूप से, अचेतन होती है लेकिन अगर हम कुछ ध्यान, योग, प्राणायाम, क्रिया और अन्य अभ्यास करें, तो हम कुंडलिनी को जागृत कर सकते हैं। कुंडलिनी इतनी शक्तिशाली ऊर्जा है, जो जागृत होने पर मानव जीवन को पूरी तरह से बदल सकती है।

कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत शोधपीठ के उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र के परिचयात्मक उद्बोधन से हुई। कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ की सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह ने किया। इस अवसर पर डॉ. मनोज द्विवेदी, डॉ. सुनील कुमार सहित अनेक शोधार्थी उपस्थित रहे।

महायोगी गुरु गोरखनाथ शोधपीठ की ई-पत्रिका का विमोचन करते सीएम। संवाद

सीएम ने किया ई-पत्रिका गोरख पथ का विमोचन

कार्यक्रम के मंच से सीएम योगी ने दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की ई-पत्रिका 'गोरख पथ' का भी विमोचन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हम जहां रहते हैं, वहां के इतिहास को जरूर जानना चाहिए। परंपरा की जानकारी से न केवल गौरव की अनुभूति होती है बल्कि वर्तमान के साथ उज्ज्वल भविष्य भी प्रशस्त होती है।

चित्र के जरिये दिखाया रामायण का दृश्य

GORAKHPUR (18 Jan): दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर यूनिवर्सिटी के महायोगी गुरु गोरखनाथ शोधपीठ में 22 जनवरी को अयोध्या राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के दृष्टिगत गुरुवार को रामायणकालीन चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने उकेरे चित्रों को जरिये रामायण का दृश्य दिखाया. शिक्षा संकाय के पूर्व अधिष्ठाता प्रो. शोभा गौड़, शिक्षा संकाय के विभागाध्यक्ष व अधिष्ठाता प्रो. सरिता पांडेय तथा शोधपीठ के उप निदेशक डा. कुशल नाथ मिश्रा ने निर्णायक की भूमिका निभाई. उन्होंने बेहतर चित्र के आधार पर दीपाली चौधरी को पहले, विष्णु देव शर्मा को दूसरे और पूजा को तीसरे स्थान के लिए चुना. इस प्रतियोगिता में यूनिवर्सिटी के विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया. इस आयोजन में शोधपीठ के सहायक निदेशक डा. सोनल सिंह, सहायक ग्रंथालयी डा. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डा. सुनील कुमार, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानंद मल्ल उपस्थित रहे.

• बच्चों ने की चित्रकारी.

गोरक्षनाथ शोधपीठ की लाइब्रेरी करेगी पब्लिक पुस्तकालय की भांति कार्य : कुलपति

☐ वेद और उपनिषद ज्ञान-विज्ञान एवं साहित्य के स्रोत हैं: प्रो रमाशंकर दूबे

☐ पब्लिक लाइब्रेरी का हो स्थानीय हितार्थ उपयोग: प्रो. आदित्य त्रिपाठी

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। केन्द्रीय ग्रन्थालय, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय एवं राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउण्डेशन, कोलकाता के तत्वाधान में कुलपति प्रो पूनम टण्डन के संरक्षण में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर के कुलपति प्रो रमाशंकर दूबे एव विशिष्ट अतिथि प्रो आदित्य त्रिपाठी विभागाध्यक्ष, पुस्तकालय विज्ञान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी रहे। प्रो आदित्य त्रिपाठी ने बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि पब्लिक लाइब्रेरी का उद्देश्य शिक्षा, संस्कृति, साहित्य, कला को सरंक्षित करना है। लाइब्रेरी समुदाय के विकास में, कौशल विकास में एव सतत शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। उन्होंने कहा कि लाइब्रेरी का कोई फिक्स मॉडल नहीं है। स्थानीय परिस्थितियों के हिसाब से हमें देखना होगा कि पब्लिक लाइब्रेरी का किस प्रकार स्थानीय लोगो के हितार्थ उपयोग कर सकते है।

मुख्य अतिथि प्रो रमाशंकर दूबे ने अपने सम्बोधन में कहा कि पुस्तकों का उद्भव भारत की भूमि पर हुआ है। किसी शहर में पब्लिक लाइब्रेरी का होना उस शहर की सभ्यता को दर्शाता है। उन्होंने घोषणा किया कि गोरखपुर नगर के सभ्यता एवं धरोहर को प्रतिबिंबित कर रहा गोरखपुर विश्वविद्यालय के महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की लाइब्रेरी नगरवासियों के लिए एकेडमिक लाइब्रेरी के साथ साथ एक पब्लिक लाइब्रेरी के रुप मे भी कार्य करेगा। संगोष्ठी में विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, विज्ञान संकाय एवं कुलसचिव प्रो शान्तनु रस्तोगी द्वारा आभार ज्ञापित किया गया। मंच का संचालन डा आमोद कुमार राय के द्वारा किया गया। इस संगोष्ठी में देशभर के अनेक विश्वविद्यालय से आये हुए ग्रन्थालयी, विषय विशेषज्ञ, प्रतिभागी एवं गोरखपुर विश्वविद्यालय के सभी संकायों के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षकगण एवं शोध-छात्र उपस्थित रहे।

Mahayogi Guru Sri Gorakshnath Shodhpeeth
DDU Gorakhpur University, Gorakhpur
MYGSGSP in News on 27 February 2024

A++ NAAC

Rashtriya Sahara Page 7

गोरक्षपीठ के योगदान को प्रतिभागियों ने दिया शब्द

■ श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन पर गोरक्षनाथ शोधपीठ डीडीयू में निबंध प्रतियोगिता आयोजित

गोरखपुर(एसएनबी)। महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ दीदउ गोविवि में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिभागियों ने श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में गोरक्षपीठ का योगदान विषय पर अपने विचार रखे। प्रतियोगिता में पथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विजेताओं को पुरस्कृत किया जायेगा।

निबंध प्रतियोगिता के बारे में बताते हुए डॉ. कुशल नाथ मिश्र ने कहा कि आज के समय में छात्रों को अपने सांस्कृतिक विरासत को ठीक से समझना चाहिए। इसी उद्देश्य से प्रतियोगियों को यह विषय दिया गया। प्रतिभागियों द्वारा लिखे निबंध की जांच विवि के शिक्षकों द्वारा कराया जाएगा। इसके उपरांत प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध छात्रों ने प्रतिभाग किया। इस आयोजन में शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ.सोनल सिंह, सहायक ग्रंथालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील कुमार, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानंद मल्ल उपस्थित रहे।

Dainik Jagran Page 2

गोरक्षनाथ शोधपीठ में हुई निबंध प्रतियोगिता

गोरखपुर : गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में सोमवार को श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में गोरक्षपीठ का योगदान विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। उप निदेशक डा. कुशल नाथ मिश्र ने बताया कि आज के समय में छात्रों को अपने सांस्कृतिक विरासत को ठीक से समझना चाहिए। इसी उद्देश्य से प्रतियोगियों को यह विषय दिया गया। प्रतिभागियों द्वारा लिखे निबंध की जांच विश्वविद्यालय के शिक्षकों द्वारा कराई जाएगी. इसके उपरांत प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध छात्रों ने प्रतिभाग किया। इस आयोजन में शोधपीठ के सहायक निदेशक डा. सोनल सिंह, सहायक ग्रंथालयी डा. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डा. सुनील कुमार, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया सिंह, चिन्मयानंद मल्ल उपस्थित रहे। जागरण

Hindustan Page 8

सांस्कृतिकविरासतकोसमझनेकीजरूरत

गोरखपुर। गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में 'श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में गोरक्षपीठ का योगदान' विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र ने कहा कि आज के समय में छात्रों को अपने सांस्कृतिक विरासत को ठीक से समझना चाहिए। डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मनोज द्विवेदी, डॉ. सुनील कुमार, हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह आदि मौजूद रहे।

गोवि स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ के सेमिनार हाल में सोमवार को निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते प्रतिभागी। • हिन्दुस्तान

Amar Ujala Page 10

गोरक्षपीठ के योगदान पर हुई निबंध प्रतियोगिता

डीडीयू के गोरक्षनाथ शोधपीठ में कार्यक्रम का किया गया आयोजन

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित गोरक्षनाथ शोधपीठ में सोमवार को श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में गोरक्षपीठ के योगदान विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया।

शोधपीठ के निदेशक डॉ. कुशलनाथ मिश्र ने बताया कि छात्रों को अपने सांस्कृतिक विरासत को ठीक से समझना चाहिए। इसी उद्देश्य से प्रतियोगियों को यह विषय दिया गया। प्रतिभागियों की ओर से लिखे गए निबंध की जांच विश्वविद्यालय के शिक्षकों द्वारा कराया जाएगा। इसके बाद प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। विभिन्न विभागों के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध छात्रों ने प्रतिभाग किया। इस आयोजन में शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. सोनल सिंह, सहायक ग्रंथालयी डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी, रिसर्च एसोसिएट डॉ. सुनील, शोध अध्येता हर्षवर्धन सिंह, कुंवर रणंजय सिंह, प्रिया, चिन्मयानंद मल्ल आदि रहे। संवाद

Swatantra Bharat Page 3

निबंध प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

गोरखपुर। गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थित महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ में कुलपति प्रो. पूनम टंडन के संरक्षण में विषय श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में गोरक्षपीठ का योगदान पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन उप निदेशक डॉ. कुशल नाथ मिश्र के निर्देशन में किया गया। डॉ. कुशल नाथ मिश्र ने बताया कि आज के समय में छात्रों को अपने सांस्कृतिक विरासत को ठीक से समझना चाहिए। इसी उद्देश्य से प्रतियोगियों को यह विषय दिया गया। प्रतिभागियों द्वारा लिखे निबंध की जांच विश्वविद्यालय के शिक्षकों द्वारा कराया जाएगा, इसके उपरांत प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध छात्रों ने प्रतिभाग किया।

गोरक्षनाथ शोधपीठ में हुई निबंध प्रतियोगिता

श्रुति परंपरा के कारण सुरक्षित है वेद

गोरखपुर : गोरखपुर विश्वविद्यालय के आइक्यूएसी के निदेशक प्रो. सुधीर श्रीवास्तव ने कहा कि वेद भारतीय ज्ञान के स्रोत हैं। श्रुति परंपरा के कारण वेद सुरक्षित रहे हैं। विचार मस्तिष्क में तरोताजा बने रहते हैं। हमारे पूर्वजों ने इस तकनीक से ज्ञान परंपरा को सुरक्षित रखा। प्रो. सुधीर विश्वविद्यालय के महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा 'भारतीय ज्ञान परंपरा' विषय पर आयोजित व्याख्यान को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे। जागरण

ई-पत्रिका गोरख पथ का विमोचन

सीएम योगी ने डीडीयू के महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ की ई-पत्रिका 'गोरख पथ' का भी विमोचन किया। उन्होंने कहा कि हम जहां रहते हैं, वहां के इतिहास को जरूर जानना चाहिए। परंपरा की जानकारी से न केवल गौरव की अनुभूति होती है बल्कि वर्तमान के साथ उज्ज्वल भविष्य का मार्ग भी प्रशस्त होता है।

कुलपति
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर–273009 (उ.प्र.)
दूरभाष : +91-551-2201577
ई–मेल : vcddugu@gmail.com

कुलसचिव
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर–273009 (उ.प्र.)
दूरभाष : +91-551-2340363
ई–मेल : registrarddugu@gmail.com

उप–निदेशक
महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर–273009 (उ.प्र.)
दूरभाष : +91-9651834400
ई–मेल : mygsgsp@gmail.com

mygsgsp@gmail.com
https://whatsapp.com/channel/0029Va9xg0560eBmO8jUhe0n
https://www.facebook.com/mygsgsp/
https://www.facebook.com/profile.php?id=61551992553606
https://twitter.com/Gorakshpeeth
https://www.youtube.com/@mygsgsp
+91- 8299829806, 9415848512, 9935823171, 9415286885
http://www.ggnsp.ddugu.ac.in/

महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ

Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University

A State University Established Under Uttar Pradesh State University Act 1973
(Accredited A++ by NAAC)